Vol 4 Issue 10 July 2015

ISSN No : 2249-894X

# Monthly Multidisciplinary Research Journal

# Review Of Research Journal

Chief Editors

**Ashok Yakkaldevi**
**A R Burla College, India**

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

**Welcome to Review Of Research**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org**

**Review Of Research**
**ISSN 2249-894X**

**Impact Factor : 3.140(UIF)**
**Volume - 4 | Issue - 10 | July - 2015**

# द्विवेदी युगीन कवियों का व्यंग्य

रेनु बाला सुपुत्री श्री हंसराज

***सारांश***

द्विवेदी युग के कवियों की मुख्य प्रवृत्ति व्यंग्यात्मक नहीं थी। वे अपने चारों ओर व्याप्त सामाजिक असंगतियों–विसंगतियों, धार्मिक विद्रूपताओं तथा आर्थिक–वैषम्य में सुधार चाहते थे, इसके लिए उन्होंने मुख्य रूप से उपदेशात्मकता को ग्रहण किया। परन्तु साथ ही उन्होंने यह भी अनुभव किया कि केवल उपदेशों के सहारे ही प्रवंचकों और विपथगामियों का मार्ग–निर्देशन नहीं किया जा सकता।

***प्रास्ताविका:***

नाथूराम शंकर शर्मा जी ने इस युग में प्रचलित विषयों पर कवितायें की हैं। काव्य–शिल्प की ओर भी इन्होंने अपने काव्य में विशेष ध्यान दिया। समस्य पूर्ति की दृष्टि से यह इस युग के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। परन्तु इनका महत्व केवल इनकी व्यंग्य कविताओं के कारण ही हैं। इन्होंने उस युग की राजनीतिक, समाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विद्रूपताओं पर अपनी सबल लेखनी से कशाघात किये। उस युग के कवियों में शंकर ही अकेले एक ऐसे कवि हैं, जिन्होंने अंग्रेजों को फटकारने का साहस किया हैं। किन्तु यह फटार अप्रत्यक्ष है और अंग्रेजों की आर्थिक शोषण की नीति पर आक्षेप का रूप लेकर गई हैं। इस प्रकार के आक्षेप इन्होंने अपनी कई कविताओं में किये हैं। इससे स्पष्ट है कि कवि शंकर अंग्रेजों की कूटनीतिज्ञतापूर्ण आर्थिक नीति से बेहद आह्त थे। अंग्रेज शासकों को सम्बोधित न करके वे भारतीयों के ही माध्यम से विडम्बना के द्वारा इस नीति पर चोट करते हैं–

देशी उद्यम की उन्नति का गहरा रंग रंगा लो,
अन्न विदेशों को भिजवाओं काठ–कबाड़ मंगालो।

अन्न के स्थान पर कांठ कबाड़ की प्राप्ति वास्तविक स्थिति की सम्पूर्ण मार्मिकता को उजागर करके विदेशी शासकों की दुर्नीति पर तीखी चोट हैं। अंग्रेज शासकों की इसी नीति के कारण स्वदेशी उद्योग–धंधे लगभग समाप्त हो गये थे। इस 'अवनति' को 'उन्नति' कहकर इन पंक्तियों में 'विडम्बना' को भी गहरी रंगत दे दी गई हैं। कवि ने अपनी कई रचनाओं में अंग्रेज अधिकारियों तथा भारतीय राज–कर्मचारियों की जी हजूरी करने वाले खुशामदी रईसों, राजाओं तथा साथ ही समूची भारतीय 'नौकरशाही' को दुत्कारा है। विदेशी महिलाओं की वेशभूषा तथा रंग ढंग को अपनाने वाली नवयुवतियों पर भी विडम्बना के द्वारा कवि ने अपना आक्रोश व्यक्त किया है। साथ ही अपनी पत्नियों की दासता करने वाले शिक्षित नवयुवकों की भी अवमानना की है। परम्परावादी विचारों के वि के लिए उनका यह कृत्य अप्रियजनक था। उपर्युक्त पद्यांश में हास्ययुक्त विडम्बना की आड़ में मीठी चोट की है। इसी कविता 'पंचपुकार' में आगे रूढ़िवादी कट्टरपंथी ब्राह्मणों की भी भर्त्सना तथा उपहास किया गया है। कवि शंकर आर्यसमाजी विचारधारा के अनुयायी थे। ब्राह्मणों के अज्ञानपूर्ण कर्मकाण्ड का इन्होंने हर प्रकार से विरोध किया था। अपनी रचनाओं में इन्होंने उनका विभिन्न प्रकार से उपहास किया हैं–

ठेके पर लेकर वैतरणी, देकर डाढ़ी–मूंछ,
वाटर–बायसिकिल के द्वारा, बिना गाय की पूंछ–
मरों को पार उतारूंगा,
किसी से कभी न हारूंगा।

महावीर प्रसाद द्विवेदी युग निर्माता साहित्यकार थे। उन्होंने जीवन भर हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिए 'सरस्वती' के माध्यम से अथक परिश्रम किया। स्वयं भी गद्य और पद्य, सभी प्रकार के साहित्य की रचना की तथा अन्य कवियों और लेखकों को भी निरन्तर प्रोत्साहित करते रहे। वे आलोचक और निबन्धकार पहले थे, कवि बाद में। यद्यपि उनके काव्य में व्यंग्य का स्वर प्रधान नहीं हैं, फिर भी उन्होंने 'गर्दभ–काव्य', 'बलीवर्द', 'सरगौ नरक ठेकाना नाहिं', टेसू की टांग' आदि व्यंग्यात्मक रचनाए लिखीं। उन्होंने विशेषरूप से सम्पादकों और साहित्यकारों को व्यंग्य का लक्ष्य बनाया। द्विवेदी जी ब्राह्मणों के धार्मिक आडम्बर तथा सामाजिक कुप्रथाओं के भी कट्टर विरोधी थे, उन्होंने 'कान्यकुब्ज लीलामृतम्' में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के पाखण्डपूर्ण कृत्यों को निरावरण कर उन पर चोट की है तथा 'बालविधवा लिाप' में बालविधवाओं के करूण–जीवन की दयनीयता को दर्शाकर हिन्दू समाज को धिक्कारा हैं। द्विवेदी जी ने साहित्य और समाज में सुधार की भावना से प्रेरित होकर व्यंग्य–कविताओं का सृजन किया– "प्रहसनों और हंसी मजाक के लेखों से मनोरंजन ही नहीं होता, लेखक यदि विज्ञ और योग्य है तो वह ऐसे लेखों से समाज और साहित्य के दोषों को दूर करने की चेष्टा करता और उनके द्वारा उन्हें लाभ पहुंचा सकता है और दण्डनीय व्यक्तियों का शासन भी कर सकता है। हिन्दी में साहित्य के इस अंश की बहुत कमी है।" दृष्टि से ये कविताएं बड़ी सशक्त और समर्थ हैं। उनके व्यंग्य की तल्खी ने अधिकांश में भर्त्सना का रूप ले लिया है, परन्तु

साथ ही उनके हास्ययुक्त वैदग्ध्य ने इस कटुता को अन्दर ही अन्दर तिलमिलाने वाली चोट के रूप में परिवर्तित कर दिया हैं। अपकर्षात्मक व्यंग्य की योजना के द्वारा भी उन्होंने लक्ष्यों को ध्वस्त किया हैं।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने विविध प्रकार के काव्य की रचना की। साहित्य जगत में वे 'प्रियप्रवास' के कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं, किन्तु अपनी फुटकल रचनाओं में उन्होंने युगीन विषमताओं का चित्रण करके उन पर पर्याप्त व्यंग्य किया हैं। उनके मन में देशोत्थान की अदम्य लालसा थी। राष्ट्र की अवनत स्थिति को देखकर उन्हें बड़ा कष्ट होता था, अतः राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विकृतियों पर प्रहार करके वे देश में फैली दुरव्यवस्था में सुधार चाहते थे। देश–हितैषिता का स्वांग करने वाले नेताओं की वास्तविकता को उजागर करके यहां उन पर आक्षेप किया है, आक्षेप का स्वर कटु होने कारण वह भर्त्सनात्मक बन गया हैं। इन नेताओं को देश के हित का उतना ध्यान नहीं है, जितना अपने नाम का डंका पिटवाने का। हरिऔध जी ने सामाजिक असंगतियों पर भी चोट करने के लिए कई चौपदे लिखे तथा मुहावरों का प्रयोग करके भी व्यंग्य को सशक्त बनाया। अनमेल विवाह की विषमता तथा विधवाओं की दयनीयता का चित्रण कर कई चौपदों में इन्होंने हिन्दु–समाज को फटकारा है। मनुष्यों के नैतिक अधःपतन को लक्ष्य कर के भी इन्होंने कई चौपदों की रचना की। इनमें इन्होंने घमंडी, स्वार्थी, आलसी और निकम्मे लोगों की खबर ली हैं। विदेशी वेशभूषा धारण करने वाले नवयुवकों का भी उपहास किया हैं।

मैथिलीशरण गुप्त का सम्पूर्ण काव्य करूणा से ओत–प्रोत हैं। व्यंग्य करना स्वभाव के विरूद्ध था। 'भारत–भारती' के वर्तमान खण्ड में उन्होंने युगीन असंगतियों पर अपना आक्रोश व्यक्त किया हैं परन्तु इसका भी उन्हें खेद था। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त विकृतियों से दुखित होकर ही काव्य–पुस्तक में कवि ने असंगतियों–विसंगतियों पर कटूक्तियां व्यक्त की हैं। समाज–सुधार के लिए उन्होंने व्यंग्य को हथियार के रूप में प्रयुक्त नहीं किया। उनके काव्य में उपदेशात्मकता की ही प्रधानता रही। 'भारत–भारती' के वर्तमान खण्ड में वे देश के दारिद्रय, दुर्भिक्ष, कृषकों की दशा, व्यापारियों, रईसों, शिक्षा और साहित्य क्षेत्र की अव्यवस्था, साधु और महन्तों, सामाजिक कुप्रथाओं आदि अनेक यगीन विषमताओं पर तीव्रता से अपना रोष प्रकट करते हैं। गुप्त जी अंग्रेजों की आर्थिक शोषण की नीति पर प्रहार न करके भारतीय व्यापारियों को ही इस शोषण का कारण समझते हैं। गुप्त जी का उद्देश्य विकृतियों पर व्यंग्य करना नहीं था, उन्होंने इन असंगतियों–विसंगतियों से आहत होकर उनका चित्रण अवश्य किया है, परन्तु यह भी मार्मिकता से पूर्ण है, इसीलिए उनका व्यंग्य तीखा और पैना नहीं बन सका है तथा सशक्त व्यंग्य रूप भी उनके काव्य में उभर कर नहीं आ सके हैं।

द्विवेदी युगीन इन मुख्य कवियों के अतिरिक्त अन्य कवियों ने भी सामाजिक कुप्रथाओं तथा भारतीयों के नैतिक और चारित्रिक पतन पर कटूक्तियां व्यक्त करके प्रहार किया हैं। रामचरित उपाध्याय ने पर्दा–प्रथा, बाल–विवाह तथा वृद्ध–विवाह पर विडम्बना के द्वारा अपना आक्रोश प्रकट किया है–

बाल–विवाह रोक हम देते यदि हमको मिलते अधिकार,
वृद्ध–ब्याह का किन्तु देश में कर देते हम खूब प्रचार।
क्योंकि साठ के होकर भी दूल्हा अभी बनेंगे हम,
किसी बालिका से विवाह कर इसमें कभी सनेंगे हम।

'वृद्ध–विवाह' की प्रचारात्मकता के अन्तर्गत भर्त्सना का भाव छिपा हुआ हैं, अतः विपरीत उक्ति के द्वारा यहां विडम्बना की योजना करके 'वृद्ध–विवाह' पर चोट की गई है। साथ ही बाल–विवाह और बालवृद्ध–विवाह का भी आक्षेप के द्वारा उपहास किया गया है। रामचरित उपाध्याय ने दूसरों पर विडम्बना के द्वारा चोट की है–

सभी जातियां आर्यों के सम बनें, कहूंगा मैं भी,
सभा–समाजों में जाकर के बैठ रहूंगा मैं भी,
सबसे सबका खाना–पीना, अच्छा है हो जावे,
पर ईश्वर। मेरे चौके में कोई कमी न आवे।
गांजा भंग अफीम आदि का यदि प्रचार रूक जावे,
तोकर नीरोग देश यह सदा सभी सुख पावे।
छिपकर किन्तु साथ चण्डी के ब्राण्डी पिया करूं मैं,
हानि नहीं जो खुलकर खण्डन इनका पिया करूं मैं।

उपर्युक्त काव्य– पंक्तियों में, पर– उपदेशकों के अंतिम पंक्तियों के विडम्बनात्मक कथन, उनके कोरे उपदेशों की वास्तविकता को नग्न कर, उन्हीं के मुख पर करारी चोट करते हैं। यहां 'मैं' के माध्यम से ही प्रथम पुरूष में प्रहार की योजना की गई है। रामचरित उपाध्याय ने युगीन असंगत स्थितियों का व्यंग्यात्मक चित्रण करके ईश्वर का भी आक्षेप के द्वारा उपहास किया है–

दुखड़ा रोवे सती और असती सुख पावे,
अज्ञ बने धनवान, विज्ञ भूखों मर जावें,
दुर्जन मक्खन चखें, सुजन हैं सत्तू खाते।
तो भी हे जगदीश। नहीं तुम तनिक लजाते।

आक्षेप का स्वर तीखा होने के कारण यहां भर्त्सना हो गया है। दीनों–दुखियों का तथाकथित उद्धारक और रक्षक तथा सज्जनों का प्रेमी ईश्वर कैसा है! जे अपने प्रिय व्यक्तियों को ही असंगतियों में डालकर सन्तुष्ट रहता है। इसी प्रकार द्विवेदी युगीन के अन्य कवियों जैसे– गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', ईश्वरी प्रसाद शर्मा, सियाराम शरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, श्रीधर पाठक, सत्यनारायण कविरत्न, केशव प्रसाद मिश्र, राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' आदि कवियों नें समाजिक विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया हैं।

द्विवेदी युगीन के कवियों की मुख्य प्रवृत्ति व्यंग्यात्मक नहीं थी। वे अपने चारों ओर व्याप्त सामाजिक असंगतियों–विसगंतियों, धार्मिक विद्रूपताओं तथा आर्थिक–वैषम्य में सुधार चाहते थे, इसके लिए उन्होंने मुख्य रूप से उपदेशात्मकता को ग्रहण किया। परन्तु साथ ही उन्होंने यह भी अनुभव किया कि केवल उपदेशों के सहारे ही प्रवंचकों और विपथगामियों का मार्ग–निर्देशन नहीं किया जा सकता हैं। वे चोट खाकर ही सही रास्ते पर आ सकते हैं। यही मलतः द्विवेदीयुगीन कवियों की व्यंग्यात्मक चेतना हैं। किन्तु व्यंग्य की आवश्यकता की प्रतीति करने करते हुए भी वे तीखी और पैनी व्यंग्य रचनाएं नहीं लिख सके, न ही सशक्त व्यंग्य–रूपों को इन रचनाओं में प्रयुक्त कर सके। जब–जब भी उन्होंने व्यंग्य का हथियार उठाया, मानवता की भावना ने अवरोध उपस्थित कर दिया। 'हर मनुष्य का हृदय निर्मल और पावन है, केवल उसे निखारने की आवश्यकता है', इस विचारधारा ने व्यंग्य की तीक्ष्णता को कुंठित कर दिया और कवि–गण लक्ष्य पर केवल आक्षेपमात्र ही करके रह गये।

मानवीयता की विचारधारा के कारण पाखण्डियों और कपटियों के प्रति भी रोष की आपेक्षा क्षोभ ही उत्पन्न हुआ। आक्रोश की इस न्यूवता के कारण ही इन कवियों का व्यंग्य सशक्त रूपों में रूपायित नहीं हो सका। इन्होंने अधिकतर लक्ष्यों का आक्षेप के द्वारा ही उपहास किया है, कहीं–कहीं कटूक्तियों ने भर्त्सना का रूप भी धारण कर लिया हैं, किन्तु ये कटूतियां विध्वंसात्मक और विस्फोटक नहीं बन सकी हैं। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने वैदग्ध्य तथा नाथूराम शंकर और रामचरित उपाध्याय ने विडम्बना का चुतुराई से प्रयोग किया हैं, परन्तु इन रूपों में भी गहरी चोट करने की सामर्थ्य नहीं आ सकी हैं। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने विशेष रूप से साहित्यिक क्षेत्र में व्याप्त असंगतियों में सुधार की भावना से प्रेरित होकर ही व्यंग्य का प्रयोग किया। नाथूराम शंकर तथा अन्य कवियों के व्यंग्य का मुख्य ध्येय सामाजिक कुरीतियों, निर्धनों की स्थिति तथा देशवासियों के नैतिक पतन में सुधार करना था। राजनीतिक विद्रूपताओं पर प्रहार करने का वे साहस नहीं कर सके, केवल कुछ रचनाओं में अंग्रेजों की आर्थिक शोषण की नीति पर आक्षेप ही करके रह गये। द्विवेदी युग में मानवीयता को आरोपित करने के लिए उपदेशात्मकता की प्रवृत्ति ने व्यंग्यात्मकता को आच्छादित कर दिया था।

## lanHkZ lwph %

1.शंकर, नाथूराम शंकर शर्मा, शंकर–सर्वस्व, पृ. 266
2.शंकर, सर्वस्व, पृ. 164
3.द्विवेदी, महावीर प्रसाद, टंडन प्रेमनारायण, हिन्दी साहित्य में हास्य और व्यंग्य, पृ. 337
4.उपाध्याय, रामचरित, सुधीन्द्र, पृ. 300
6.उपाध्याय, रामचरित, सुधीन्द्र, पृ. 208
7.उपाध्याय, रामचरित, सुधीन्द्र, पृ. 208

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org